

MP Board Class 6th Notes Sanskrit Chapter 18

दीपावलि:

दीपावलि: हिन्दी अनुवाद

भारतवर्षे बहवः उत्सवाः भवन्ति। यथा-नवरात्रं, होलिका, रक्षाबन्धनं च। एतेषु दीपावलिः इति प्रधानः उत्सवः कार्तिकामासे कृष्णपक्षे अमावस्यायां तिथौ भवति। भगवतः रामस्य अयोध्यागमने अयोध्यायां प्रथमं दीपावलिः आयोजिता इति जनश्रुतिः। एष दीपोत्सवः प्रकाशोत्सवः च। एषः पञ्चदिवसीयः उत्सवः। अस्य पञ्चसु अपि दिवसेषु सर्वत्र दीपानाम् आवलिः दृश्यते।

अनुवाद :

भारतवर्ष में बहुत से उत्सव (त्यौहार) होते हैं। जैसे- नवरातें, होली और रक्षाबन्धन। इनमें 'दीपावली' प्रधान उत्सव कार्तिक महीने में कृष्ण पक्ष में अमावस्या की तिथि को होता है। भगवान राम के अयोध्या आने पर अयोध्या में सबसे पहली दीपावली आयोजित की गई-ऐसी जनश्रुति है। यह दीपोत्सव और प्रकाशोत्सव है। यह पाँच दिवसीय उत्सव है। इसके पाँच दिनों पर ही सर्वत्र दीपकों की पंक्तियाँ दिखाई पड़ती हैं।

प्रथमदिवसे त्रयोदश्यां जनाः आभूषणानि गृहपात्राणि स्वर्ण रजतं वा क्रीणन्ति। धन्वन्तरीति वैद्यराजः अद्य एव पूज्यते। द्वितीयदिवसस्य चतुर्दश्याः विशेषता अस्ति सूर्योदयात् प्राक् अभ्यङ्गस्नानम्। तृतीयदिवसे अमावस्यायां जनाः धनदेवी लक्ष्मी पूजयन्ति। व्यापारिणः व्यापारपुस्तकानामपि पूजनं कुर्वन्ति।

अनुवाद :

पहले दिन त्रयोदशी को लोग आभूषण, घर के बर्तन, स्वर्ण अथवा चाँदी खरीदते हैं। 'धन्वन्तरि' नामक वैद्यराज आज भी पूजे जाते हैं। दूसरे दिन चतुर्दशी की विशेषता है सूर्य उदय होने से पहले पूरे शरीर से मंगल स्नान करने की। तीसरे दिन अमावस्या को लोग धन देवी लक्ष्मी की पूजा करते हैं। व्यापारी लोग व्यापार पुस्तकों का भी पूजन करते हैं।

चतुर्थे दिवसे कार्तिकप्रतिपदि शुक्लपक्षे व्यापारिणां नूतनः संवत्सरः प्रारभते। कृषकाः पशुपालकाः च गोवर्धनं पूजयन्ति गोधनं च अलङ्कर्वन्ति। अन्तिमदिवसे द्वितीयायां भ्रातृभगिन्यौ मिलतः, परस्परं सत्कारयतः दीर्घजीवनं सुखसमृद्धिं च कामयतः।

अनुवाद :

चौथे दिन कार्तिक महीने की शुक्लपक्ष की प्रतिपदा को व्यापारियों का नया संवत्सर प्रारम्भ होता है। किसान और पशुपालक (ग्वाले) गोवर्धन की पूजा करते हैं और गोधन को सजाते हैं। अन्तिम दिन पर द्वितीया को (दौज पर) भाई और बहन मिलते हैं, परस्पर (एक-दूसरे का) सत्कार करते हैं, दीर्घ जीवन (लम्बी उम्र) तथा सुख-समृद्धि की कामना करते हैं।

अस्मिन् समये सर्वत्र आनन्दः प्रवर्तते। कृषकाणां गृहेषु नूतनान्नं नवधान्यम् समागच्छति। नदीजलं स्वच्छम् आकाशः निरभ्रः दृश्यते। आपणाः द्रव्यैः ग्राहकैः च परिपूर्णाः भवन्ति। बालकाः अग्निक्रीडनकानि ज्वालयन्ति। गृहेषु मिष्ठान्नस्य सेवनं भवति। लाजाः देवेभ्यः अतिथिभ्यः च समर्पिताः भवन्ति। गृहाणां पुरतः अल्पनारेखनं दृश्यते।

तमसो मा ज्योतिर्गमय” इति दीपावलिसन्देशः। सर्वे जनाः परस्परं मिलन्ति अभिनन्दन्ति च। अभिनन्दनपत्राणि प्रेषयन्ति ते प्रार्थयन्ति च।।

“शुभं करोतु कल्याणं, आरोग्यं सुखसम्पदम्।
शत्रुबुद्धिविनाशाय दीपज्योतिर्नमोऽस्तुते॥”

अनुवाद :

इस अवसर पर सब जगह आनन्द ही आनन्द होता है।

किसानों के घरों में नया अन्न तथा नया धान्य आ जाता है।

नदी जल स्वच्छ और आकाश बादलों से रहित दिखाई पड़ता है। दुकानें द्रव्य और ग्राहकों से परिपूर्ण होती हैं। बालक आतिशबाजी जलाते हैं। घरों में मिठाई का सेवन होता है। खीलें देवताओं और अतिथियों को समर्पित की जाती हैं। घरों के सामने अल्पना बनायी हुई दिखाई देती हैं।

‘अन्धकार से ज्योति (उजाले) की ओर मुझे ले चलो’, यह ही दीपावली का सन्देश है। सभी लोग आपस में मिलते हैं और (एक-दूसरे का) अभिनन्दन करते हैं। वे अभिनन्दनपत्र भेजते हैं और प्रार्थना करते हैं- “हे दीपक की ज्योति तुम्हें नमस्कार है, तुम शुभ और कल्याण करो, आरोग्य और सम्पदा (देती हो) तथा दुष्ट (शत्रु) बुद्धि का विनाश करती हो।”

दीपावलिः शब्दार्थः

जनश्रुतिः = लोगों की मान्यता। आवलिः = कतार, पंक्ति।। स्वर्ण = सुवर्ण को। रजतं = चाँदी को। क्रीणन्ति = खरीदते हैं। धन्वन्तरिः = यह भारतीय परम्परा में प्रथम वैद्य हैं। प्राक् = पूर्व। अभ्यङ्गस्नानम् = मङ्गलस्नान। (यह शरीर पर तेल लगाकर गर्म जल से किया जाता है।) संवत्सरः = वर्ष कामयतः = कामना करते हैं। अग्निक्रीडनकम् = आतिशबाजी। लाजाः = धान की लाई। अल्पना = रंगोली। तमसः = अन्धेरे से। ज्योतिर्गमय = उजाले की ओर ले चलो। आलङ्कर्वन्ति = सजाते हैं। निरभ्रः = बादल रहित।